# सामंजस्य के लिए स्वर

*जुलियन द्वारा एक संगीतमय प्रस्तुति*

कोविड-१९ के कारण उत्पन्न इन असाधारण परिस्थितियों के दौरान इस "मन्दिर में रहो" सत्संग में कुछ प्रस्तुत करना, मेरे लिए बड़े सम्मान व प्रसन्नता की बात है। ये सत्संग एक अद्वितीय उपहार और जीवनरेखा रहे हैं। सिद्धयोग वैश्विक हॉल में गुरुमाई जी के साथ और विश्वभर से सिद्धयोगियों के साथ जुड़ना मुझे बहुत अच्छा लगा।

मैंने बहुत छोटी आयु से संगीत-शिक्षा प्राप्त की और मैं सिद्धयोग संगीत की सेवा अर्पित करता रहा हूँ। विशेष तौर पर जब मुझे गुरुमाई जी के लिए संगीत प्रस्तुत करने का सुअवसर प्राप्त हुआ, इस सेवा ने सचमुच मेरी सहायता की है ताकि मैं संगीत में निहित आनन्द के साथ गहराई से जुड़ सकूँ और उस आनन्द को दूसरों के साथ बाँट सकूँ।

आज, मैं योहान सेबास्टियन बाह्ख़ की दो रचनाएँ प्रस्तुत करने जा रहा हूँ। पहली रचना है 'सिसिलिआनो' जो थोड़ा धीमा और नृत्य को प्रोत्साहित करने वाला संगीत है और दूसरी रचना को कहा जाता है 'प्रेस्टो', जिसकी गति काफ़ी तेज़ होती है। बाह्ख़ जी, मेरे पसन्दीदा संगीतकारों में से हैं और उनकी ये दो रचनाएँ मुझे सबसे अधिक प्रिय हैं। बाह्ख़ जी ने दिव्य शक्ति के सम्मान में इन्हें लिखा था, वह दिव्य शक्ति जो उनसे अधिक महान है। इस संगीत में आप सचमुच उस शक्ति को महसूस कर सकते हैं। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि किसी एक स्वर पर अधिक ज़ोर न दिया जाए। किसी एक स्वर की सुन्दरता प्रस्तुत करने के बजाय, वे चाहते थे कि सुनने वालों का ध्यान पूरी धुन पर रहे।

बाह्ख़ जी की रचनाओं को प्रस्तुत करते समय सम्पूर्ण धुन को व्यक्त करने के लिए यह ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है कि स्वरों का प्रवाह और तालमेल बना रहे। ये दोनों रचनाएँ, एक के बाद एक बजाई जाती हैं और इनके बीच मात्र कुछ क्षणों का विराम दिया जाता है।

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।